GRIZZLY
COLLEGE OF EDUCATION
Recognised by ERC, NCTE: Affiliated to VBU Hazaribagh

प्रतिकृति

Bulletin ISSUE May-June - 2016

From the Director's Desk

मई और जून की तपती गर्मी मे भी छात्रों में इतनी ऊर्जा। प्रतिदिन के रूटीन से इतर व्यक्तित्व विकास बल्कि कहा जाय Multi dimensional Personality Development के प्रति सचेत अपने Students से हमें भी ऊर्जा और उत्साह मिलता है। हमे कल के उन बच्चों के भविष्य का आभास हो रहा है, जिनके निर्माण की जिम्मेवारी हमारे आज के इन छात्रों पर है। हम सबकी शुभकामनाएँ आपको, सब सपरिवार स्वस्थ रहें और हर हाल में खुश रहें।

मनीष कपसिमे ***अविनाश सेठ*** ***अरूण मिश्रा***

Dr. Sanjeeta Kumari
Principal

From Principal's Desk

मई–जून माह भी ग्रिजली कॉलेज ऑफ एजुकेशन के लिए काफी उत्साहवर्द्धक रहा। जहाँ एक ओर महान शिक्षाविद् दार्शनिक प्रकृतिवाद के प्रणेता रविन्द्रनाथ टैगोर की जयन्ती मनाई गई जिसमें शिक्षक एवं छात्रों की भागीदारी शत–प्रतिशत रही। इसके साथ–साथ व्यक्तित्व विकास से सम्बंधित कार्यक्रम का आयोजन एक बेहतर प्रयास था जिसके द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व का रचनात्मक विकास किया गया। ग्रीष्मावकास के बाद पुनः प्रथम सेमेस्टर के पाठ्यक्रम की समीक्षा की गई तथा वैसे सभी शैक्षिक समस्याओं का निराकरण (निदान) किया जा रहा है जो छात्रों के बेहतर तैयारी में अवरोधक बने हुए हैं। छात्रों के आगामी परीक्षा हेतु बेहतर परामर्श एवं मार्गदर्शन दिया जा रहा है ताकि उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सके। 21 जून को महाविद्यालय परिवार ने अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया जिसमें सभी की सहभागिता रही। महाविद्यालय परिसर में योगमय वातावरण दिखा, "योग भगाये रोग आप सभी रहें निरोग" इस संदेश के साथ यह पर्व सम्पन्न हुआ। माह के अन्त में विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन जो कि कोडरमा विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वाधान में हुआ काफी सफल रहा। इस माह की शैक्षिक उपलब्धि पर आप सभी को बधाई एवं अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

Dr. Sanjeeta Kumari
Principal

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Activities of the Month May & June' 2016

RABINDRA NATH TAGORE JAYANTI

PERSONALITY DEVELOPMENT PROGRAMME

EPC ACTIVITY PROGRAMME

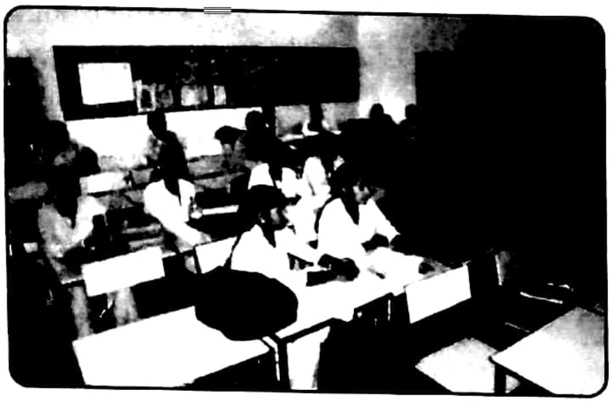

INTERNATIONAL YOGA DAY

MOBILE LOK ADALAT CUM LEGAL AWARENESS PROGRAMME

SHANTI PATH

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सूक्ति

चला: लक्ष्मीश्चला: प्राणाश्चलं जीवितयौवनम्।
चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चल: ।।1।।

- मनुष्य का धन, प्राण, जीवन, युवावस्था – यह सभी पूर्णतः नाशवान है और स्थिर नहीं है। लेकिन मनुष्य का धर्म ही निश्चल है।

सत्येन धार्यते पृथिवी सत्येन तपते रवि: ।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ।।2।।

- सत्य के कारण ही जीवन पृथवी पर उपस्थित है, सूर्य का तेज स्थिर रहता है और वायु का संरचन होता है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी सत्य के कारण ही स्थित है।

विद्या मित्रं प्रवाशेषु आर्या मित्रं गृहेषु च ।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतष्य च ।।3।।

- विदेशों में विद्याा ही मित्र होती है और घर में गुणवान पत्नी मित्र होती है। रोगी मनुष्य के लिए औषधि मित्र है और मरे हुए इन्सान के लिए उसके द्वारा किया गया पुण्यकार्य (धर्म) ही उसका मित्र है।

कामधेनुगुणा विद्या ह्यकाले फलदायिनी ।
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम् ।।4।।

- विद्या में कामधेनु के समान गुण होता है यह असमय में भी फल देने वाली है। यह विदेश में माता के समान होती है – अतः विद्या को गुप्त धन कहा गया है।

वरयेको गुणी पुत्रो निर्गुणैश्च शतैरपि ।
एकश्चन्द्रस्मतोष्न्ति न च तारा: सहस्रश: ।।5।।

- सैकड़ों गुणहीन पुत्रों की अपेक्षा केवल एक ही गुणवान पुत्र श्रेष्ठ है, क्योंकि चन्द्रमा अकेला ही अंधकार का नाश करता है परन्तु हजार तारे नहीं।

क: काला कानि मित्राणि को देश: कौ व्ययाऽऽगमौ।
कश्चाऽहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहु: ।।6।।

- कौन सा समय है, कौन मेरे मित्र हैं, कौन सा देश है क्या मेरी व्यय और आय हैं, मैं कौन हूँ और मेरी शक्ति क्या है – इन सब बातों पर बार–बार चिन्तन–मनन करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

जनिता चोपनेता च यस्तु विद्यां प्रयच्छिति।

अन्नदाता भयत्राता पञ्चैता पितरः स्मृता ।।7।।

- जन्म दने वाला पिता उपनयन संस्कार कराने वाला गुरू, विद्या देने वाला गुरू, अन्न प्रदान करने वाला और भय से रक्षा करने वाला – इन पांचों को पिता कहा गया है।

राजपत्नी गुरोः पत्नी मित्रपत्नी तथैव च।

पत्नीमाता स्वमाता च पञ्चैता मातरः स्मृता ।।8।।

- राजा की पत्नी,, गुरू की पत्नी, मित्र की पत्नी, पत्नी की माता और स्वयं की माता को माता कहा गया है।

स्वयं कर्म करो व्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते।

स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद्विमुच्यते ।।9।।

- जीव स्वयं ही कर्म करता है, स्वयं ही उनका फल भोगता है। वह स्वयं ही संसार में भ्रमण करता है और स्वयं ही पुरूषार्थ करके संसार से छुटकर मोक्ष प्राप्त करता है।

विवेकानन्द पाण्डेय

“परिपूर्णता की तलाश”

एक नगर में एक चित्रकार रहता था। वह रोज नए–नए चित्र बनाकर अपनी कला को निखारने का प्रयास करता था। एक दिन उसने एक बहुत खुबसूरत चित्र बनाया। उसने सोचा क्यों न इस चित्र को सभी लोग देखें। चित्रकार उस चित्र को पास वाले बाजार में ले गया और एक जगह इस प्रकार टॉंग दिया जिससे की सभी राहगीरों की नजर उस पर पड़े। साथ ही उसने चित्र के नीचे लिख – “जिसे भी चित्र में कोई गलती नजर आए वह उसे घेर दे।”

दूसरे दिन जब वह बाजार गया तो देखा कि चित्र में हर जगह घेरा हुआ है। चित्रकार अपने चित्र की दशा को देखकर उदास हो गया तथा घर वापस चला गया। उसे मायूस देखकर उसके पिताजी ने कारण पूछा। कारण जानकर पिताजी ने कहा – “बेटा, तुम चित्र के नीचे यह लिख दो की जिसे भी इस चित्र में कोई गलती नजर आए वे कृपया कर उसे सुधार दें।” चित्रकार ने वैसा ही किया। दूसरे दिन जब उसने बाजार जाकर चित्र देखा तो अचंभित रह गया। चित्र पर एक भी निशान नहीं था। घर जाकर चित्रकार ने अपने पिताजी को सारी बातें बताई। तब पिताजी ने कहा – “बेटा, जब गलती ढूढ़ने की बात आई तो किसी ने मौका नहीं छोड़ा परन्तु जब चित्र में सुधार लाने बोला गया तो किसी ने हिम्मत नहीं दिखाई। लोग हमेशा दूसरों में गलतियाँ ढूँढ़ते रहते हैं परन्तु कभी गलतियों को सुधारने का प्रयास नहीं करते।”

हम इंसान व्यर्थ में ही दूसरों से परिपूर्णता की अपेक्षा करते हैं, निपुणता तलाशते जबकि हम खुद परिपूर्ण नहीं होते। यदि हम अपना समय खुद में परिपूर्णता तलाशने में लगाए तो हम निश्चित रूप से खुद में सुधार ला सकते हैं, खुद को विकसित कर सकते हैं।

वर्णिता नाग
620, रूसो

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

"उत्तराधिकार"

पहले वे छीनते हैं
बेटियों से उनका हक,
फिर फेंकते हैं थोड़ा सा पैसा।
थोड़ी खैरात

बेटों को देते सारी की सारी
जमीन, जायदाद, फिक्स्ड डिपाजिट
देते हैं आशीष, अपना संग अपना साथ।

और इस तरह से बेटियाँ
इस देश की पैदा होते ही होती अनाथ।
जिस दिन बनवाओ बेटे के लिए घर
उस दिन लाना एक ईट बेटी के लिए

ईट पर ईट रखते प्रतिदिन,
बन जाय शायद
उसकी भी झोपड़ी।

बेटी उगाएगी उसके चहुँ ओर
कुछ फूल, अनार का वृक्ष
एक कटहल और कहेगी,

ये फूल मेरी अम्मा है,
और मेरे बाबा कटहल
बहुत प्यार करते हैं, वे मुझको
भेजूँगी ये सारे के सारे उनको अनार।

बासुदेव कुमार यादव
638, विवेकानन्द

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Best House of The Month **May'16 : RADHAKRISHNAN HOUSE**
Best House of The Month **June'16 : VIVEKANAND HOUSE**

ACHIEVEMENTS

100% Attendance in May' 2016

Anita Kumari	601
Kusum Kumari	616
Basudeo Kumar Yadav	638
Navlesh Prajapati	641
Ranjit Kumar	644
Priti Kumari	680

Editorial Board :
Prof. V. N. Pandey,
Dr. B. Thakur, Prof. P. Kumar

Chief Editor :
Dr. Sanjeeta Kumari

Editorial Board Student :
Barnita Nag & Basudev Kumar Yadav

Book - Post

Message Column

To

PRINTED AT: BHAGWATI PRESS, JHUMRITELAIYA, PH.# 06534-222453

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner